भारतीय समाज पर धार्मिक एवं सामाजिक आंदोलनों का प्रभाव : सवाल, संघर्ष एवं परिवर्तन

डॉ. अर्चना कुमारी

सारांश–इस धरा पर परिवर्तन की यात्रा में धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलनों का महत्वपूर्ण योगदान ही नहीं रहा, वरन् ये एक प्रमुख अभिकरण के रूप में उत्तरदायी भी रहे। मानव सभ्यता की यात्रा के बीच मूल्य एवं मान्यताओं के रूप में मानव के सामाजिक जीवन की स्थापना धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलनों से ही संभव हो पायी है। भारत ही नहीं, वरन् पूरी दुनियां में व्यवस्था परिवर्तन हेतु धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलनों के माध्यम से सर्वप्रथम शंखनाद किया। धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलनों के नायकों ने अपने पूरे जीवन को समाज हेतु समर्पित कर दिया। भारत में ऐसे ढेर सारी कलंकारी व्यवस्था रही है, जो मानवता के लिए एक काला धब्बा था। वास्तव में इन काले धब्बों को धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलनों के माध्यम से समाप्त करके भारतीय समाज को नई ऊचाईयों पर स्थापित करने का प्रयास इन आन्दोलनों से जुड़े नायकों का रहा है। इनके प्रयासों से ही भारतीय समाज की पहचान वैश्विक स्तर पर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के रूप में स्थापित रही है।